

15 April The Hindu

Necessary Steps to ending poverty

आज से 50 साल पहले इंदिरा गांधी ने गरीबी उन्मूलन के संबंध में 'गरीबी-हटाओ' का नारा दिया।

1960 के दशक के उत्तरार्ध में गरीबी में कमी की शुरुआत हुई, और 1980 के दशक में गरीबी समाप्त करने के लिए विभिन्न प्रोग्राम चलाए थे।

भारत में गरीबी को कम करने में आय सृजन की भूमिका महत्वपूर्ण है। 1980 के दशक में आर्थिक विकास तथा 1960 के दशक में हरित क्रांति के परिणामस्वरूप कृषि उत्पादन बढ़ने से गरीबी में कमी आई।

विभिन्न सरकारों द्वारा समय-समय पर गरीबी उन्मूलन के प्रोग्राम चलाए गए किंतु गरीबी को खत्म नहीं किया जा सका है, आज भी गरीबी काफी मात्रा में है।

हाल ही में सरकार द्वारा गरीबों के लिए विभिन्न कल्याणकारी कार्यक्रम घोषित किये गये इसी क्रम में पीएम-किसान योजना और न्याय योजना चर्चा में रही।

पीएम-किसान-योजना और 'न्याय' योजना की तुलना करे तो पीएम किसान योजना में सिर्फ किसानों को शामिल किया है, और राशि भी बहुत अधिक नहीं है, इसका क्रियान्वयन न्याय योजना की अपेक्षा सरल है। दूसरी ओर एक और कल्याण-कार्यक्रम जो कांग्रेस द्वारा जारी किया गया 'न्याय' योजना इसके अंतर्गत न्यूनतम आय सुरक्षा गारंटी प्रदान की जाएगी। इस योजना में वास्तविक चुनौती लाभार्थियों के पहचान मुद्दे से संबंधित है। न्याय योजना में देश के 20% गरीब परिवारों को एक साल में 72,000 रु. प्रदान किए जाएंगे। न्याय योजना की लागत 3.6 लाख करोड़ प्रतिवर्ष है, जो 2019-20 के बजट का लगभग 13% है।

यह राशि हमारे स्वास्थ्य व शिक्षा बजट की दुगुनी है।

इस योजना को लागू करने के लिए देश में सामाजिक और भौतिक बुनियादी ढांचे की कमी है।

गरीबी के कारणों को दूर करने के लिए क्षमता सुधार पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

सरकार द्वारा स्वास्थ्य व शिक्षा जैसी सुविधाओं पर खर्च किया जाना चाहिए। ताकि लोगों की क्षमता में वृद्धि हो और वे आय सृजन कर पाएं-

विभिन्न राज्यों में गरीबी के कारण अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन सरकार द्वारा सभी के लिए एक समान नीतियां बनाई जाती हैं, जिससे उनका प्रभाव कम होता है।

गरीबी उन्मूलन हेतु आय समर्थन करना पर्याप्त नहीं हो सकता बल्कि इसके लिए जीवन जीने में सक्षम बनाने वाली क्षमताओं में सुधार जरूरी है।

बहुआयामी गरीबी सूचकांक

ग्लोबल एमपीआई को सर्वप्रथम वर्ष 2010 में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) तथा ऑक्सफोर्ड पॉवर्टी एंड ह्यूमैन डेवलपमेंट इनिशिएटिव (OPHI) द्वारा विकसित किया गया था।

यह विश्व बैंक की तरह केवल आय के आधार पर गरीबी का आकलन नहीं करता है, बल्कि बहुआयामी रूप से गरीबी का आकलन करता है। यह तीन श्रेणियों स्वास्थ्य, शिक्षा, रहन-सहन के आधार पर मुख्यतः 10 संकेतकों पर एमपीआई का आकलन करता है। इन तीनों श्रेणियों को इंडेक्स में समान वेटेज प्राप्त है।

ये 10 संकेतक तीन श्रेणियों में विभाजित हैं:

स्वास्थ्य : पोषण व शिशु मृत्यु दर

शिक्षा : स्कूलिंग वर्ष व स्कूल में उपस्थिति

रहन-सहन : खाना पकाने का ईंधन, शौचालय, पेयजल, बिजली, आवास व संपत्ति।

भारत में गरीबी की स्थिति

वर्ष 2005-06 में भारत में बहुआयामी गरीब लोगों की संख्या 635 मिलियन (63.5 करोड़) थी, जो कि भारत की जनसंख्या का 55% थी।

वर्ष 2015-16 में भारत में बहुआयामी गरीब लोगों की संख्या घटकर 364 मिलियन (36.4 करोड़) रह गयी है, जो कि भारत की जनसंख्या का 27.5% है। भारत के 8.6% लोग चरम गरीबी में जीवन यापन करते हैं।

- इस अवधि में सर्वाधिक सुधार झारखंड में देखा गया। वहीं बिहार अभी भी भारत का सबसे गरीब राज्य है जहां की आधी से अधिक आबादी गरीब है। जबकि दिल्ली, केरल और गोवा में बहुआयामी गरीबी सबसे कम है।
- भारत की आधे से अधिक गरीब आबादी 4 राज्यों- बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश में (19.6 करोड़ संकेद्रित है।
- मध्य प्रदेश का अलीराजपुर जिला देश का सर्वाधिक गरीब जिला है जहां की 76.5 प्रतिशत आबादी गरीब है।
- 'पोषण' के संकेतक में भारत का प्रदर्शन सबसे खराब रहा है।

भारत में गरीबी के कारण

- भारत में गरीबी का मुख्य कारण बढ़ती जनसंख्या दर है। इससे निरक्षरता, खराब स्वास्थ्य सुविधाएं और वित्तीय संसाधनों की कमी की दर बढ़ती है। इसके अलावा उच्च जनसंख्या दर से प्रति व्यक्ति आय भी प्रभावित होती है और प्रति व्यक्ति आय घटती है।
- एक अनुमान के अनुसार भारत की आबादी सन् 2026 तक 1.5 बिलियन हो सकती है और भारत विश्व का सबसे अधिक आबादी वाला राष्ट्र हो सकता है। भारत की आबादी जिस रफ्तार से बढ़ रही है उस रफ्तार से भारत की अर्थव्यवस्था नहीं बढ़ रही। इसका नतीजा होगा नौकरियों की कमी। इतनी आबादी के लिए लगभग 20 मिलियन नई नौकरियों की जरूरत होगी। यदि नौकरियों की संख्या नहीं बढ़ाई गई तो गरीबों की संख्या बढ़ती जाएगी।
- बुनियादी वस्तुओं की लगातार बढ़ती कीमतें भी गरीबी का एक प्रमुख कारण हैं। गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले व्यक्ति के लिए जीवित रहना ही एक चुनौती है। भारत में गरीबी का एक अन्य कारण जाति व्यवस्था और आय के संसाधनों का असमान वितरण भी है।
- सरकार को गरीबी निवारण हेतु विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की घोषणाओं के साथ इसके उचित क्रियान्वयन पर ध्यान देना चाहिए साथ ही आय सृजन के अवसरों में वृद्धि के साथ क्षमता सुधार पर ध्यान देना चाहिए।

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-
 1. सापेक्ष निर्धनता विभिन्न वर्गों, प्रदेशों और देशों की तुलना में पाई जाने वाली गरीबी है।
 2. निर्धनता रेखा प्रति व्यक्ति औसत मासिक व्यय को प्रकट करती है जिसके द्वारा लोग अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं को संतुष्ट करते हैं।
 उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?
 - (a) केवल 1
 - (b) केवल 2
 - (c) 1 और 2
 - (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर (c)

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न-भारत में गरीबी को कम करने के लिए सरकार द्वारा समय-समय पर विभिन्न योजनाएं चलाई गईं लेकिन इसके बावजूद भी गरीबी को कम नहीं किया जा सका है। हाल ही में सरकार द्वारा गरीबी को कम करने के लिए चलाई जा रही योजनाओं की समीक्षा कीजिए।